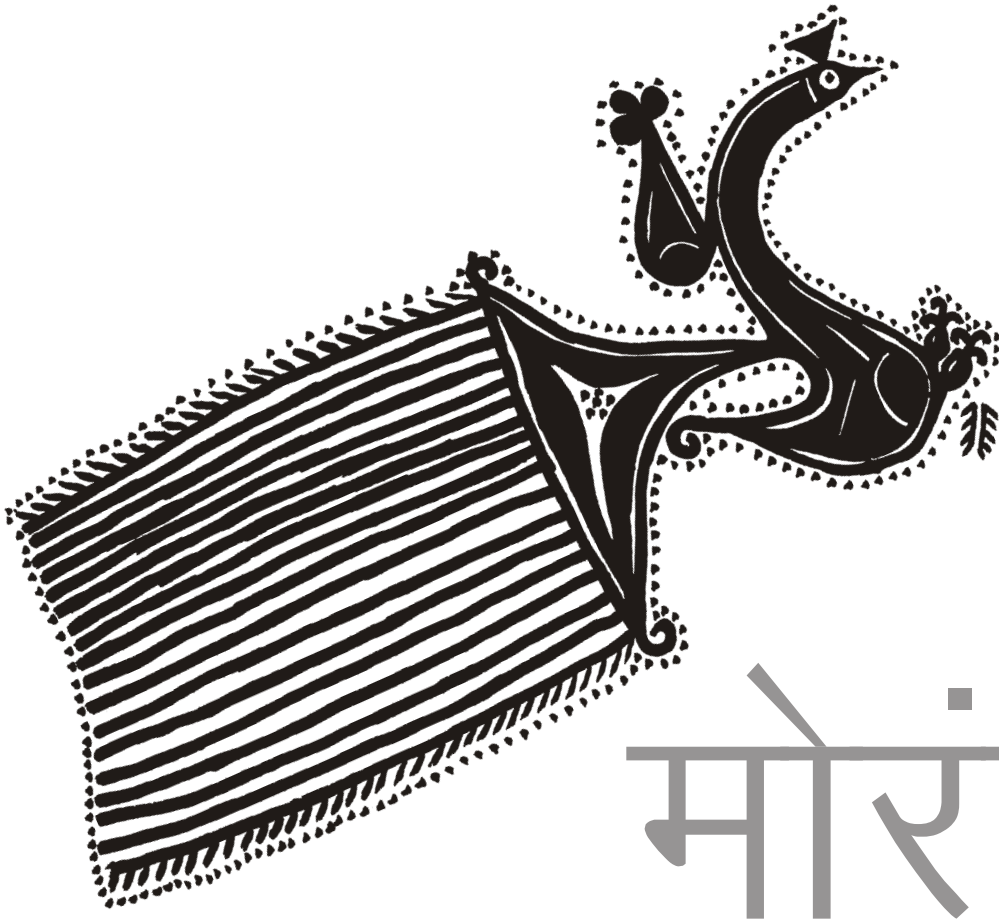

मोरंगे

जुलाई 09

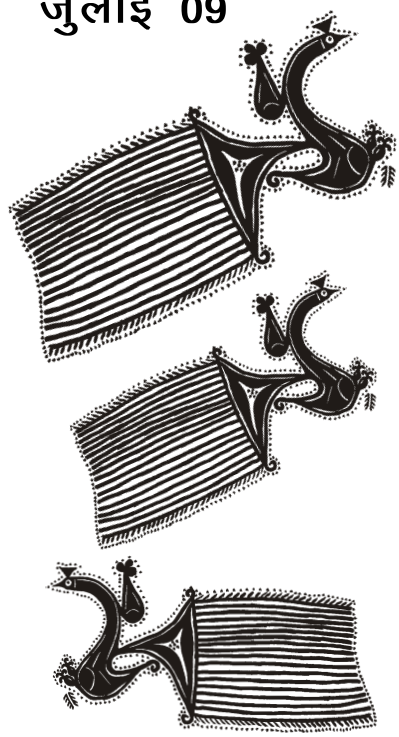

मोर के मोरंगे

प्यारी सी आंखें हैं,
सुंदर सी तिलंगी है,
नीली सी तिलंगी है,
लचकीली गर्दन है,
लम्बे से मोरंगे हैं,
मोर के ये मोरंगे हैं,
प्यारे–प्यारे मोरंगे हैं।

अटल मीणा
उम्र 10 वर्ष, समूह झील

नरेशी मीणा,
समूह–सागर

इस बार

कविताएं

राजा गोल मोर के मोरंगे मन के ढोल टक ठक
हैलपर उतर कर आता नीम का पेड़

कहानियां

मीश्का का दलिया
विनोद का जन्मदिन चिड़िया का धन्यवाद
मैं घर के ऊपर से होकर आऊंगा

घटनाएं

अचानक मैं बहुत डरा चूहा और चील

संस्मरण

ओजू पूंछूंगौ पढ़ने तो अपने ही स्कूल में आना था न
तथा पखेरू मेरी याद के व अन्य स्तम्भ

सम्पादन–प्रभात अंक–1

सहयोग–भारती, मीनू मिश्रा कमलेश, दिनेश शुक्ला

आवरण चित्र हमें कलाकार मदन मीणा के सहयोग से प्राप्त हुआ है जो कि अब ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का 'लोगो' भी है

डिजाईन–शिवकुमार गांधी

प्रबंधन–मनीष पांडेय, सचिव, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

पत्रिका का पता–मोरंगे, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र, 3/155, हाउसिंग बोर्ड, सवाईमाधोपुर राजस्थान

Email;graminswm@gmail.com
website; graminshiksha.in
ph.no. & fax 07462-233057

मोरंगे

पखेरू मेरी याद के

मानसिंह और फोरसिंह

सवाईमाधोपुर–श्योपुर रोड पर खण्डार स्टैण्ड से बोदल तक के रास्ते जैसा सुंदर रास्ता मैंने जीवन में नहीं देखा। सड़क के दोनों ओर बियाबान जंगल और उसमें से गुजरती हुई बस। अगल–बगल ऊपर–नीचे छीले,धौंक आदि जंगली दरख्तों की छायाओं से ढंकी हुई,चलती जाती हुई बस। ऐसा लगता है जैसे वह हरियाली की सुरंग से होकर गुजर रही हो। कुशाली दर्रा पार करते ही रोमांच अचानक से और तेज हो जाता है। आप तब अपने दोनों ओर सैंकड़ों मील के विस्तार में फैले जंगल में होते हैं, विश्व–प्रसिद्ध रणथम्भौर वन्य जीव अभयारण्य में।

मेरी बड़ी इच्छा होती है कि बस से उतर कर जंगल में सुदूर निकल जाऊं जहां जाकर देख पाऊं कि बाघों की मांदें कैसी हैं ?बाघों के परिवार उनमें कैसे रहते हैं ?रीछ इस वक्त क्या कर रहे होंगे ? उन्हें शहद मिल गया होगा कि वे चीटों से ही काम चला रहे होंगे ?जंगली भैंसे और जंगली सूअर किन मैदानों में निडर खड़े होंगे ?पक्षी और उनके झरने जंगली हरे प्रकाश में कैसे दिखाई दे रहे होंगे ? जंगल को देखने की मेरी उमंग भरी जिज्ञासाओं का कोई अंत नहीं है।

मगर मैंने अभी तक जंगल में जाकर नहीं देखा है। बारिश में जंगल बंद रहता है। अब शायद अक्तूबर में खुले। सर्दियों में हरा गुलाबी जंगल होगा। उसमें विचरते पीले भूरे धारीदार बिल्ली वंश के वन्य जीव। और दुनिया भर से आने वाले गोरे, गुलाबी,गेहुंआ और श्याम वर्ण के रंग–बिरंगे घुमंतू सैलानी। सर्दियों तक के लिए मैंने अपनी जंगल देखने की जंगल से भी जंगली भूख को मानसिंह और फोर सिंह से जंगल के किस्से सुन–सुनकर बुझाया हुआ है।

मानसिंह उदय सामुदायिक पाठशाला बोदल में पाठशाला परिसर की देख रेख का काम करता है और फोर सिंह जगनपुरा पाठशाला परिसर की। बोदल पाठशाला का दो–तीन बीघा का परिसर है, जो मूलतः खेत है। उसी में एक कुंआ है। परिसर की चाहरदीवारी को लांध जाओ तो आप जंगल में होते हैं। इससे आप कल्पना कर सकते हैं कि यह स्कूल किस तरह बिल्कुल जंगल की गोद में चल रहा है। मानसिंह ने भिड़ते ही कुंए से पानी खींचकर पिलाया। फिर वहीं नीबू की छाया में बैठकर बात करने लगा–'क्याल तो सर जी एक साधु कू न्हार नै खा लियौ।'
मेरा चेहरे पर जंगली सन्नाटा छा गया और आंखें चौड़ी हो गई। वह निर्विकार बोलता रहा। उसकी बोली तो मैं लिख नहीं पाऊंगा। पर उसने जो बताया

वह यह था कि कोई साधु आधी से कुछ अधिक रात में ही या सुबह के चार बजे के आसपास जंगल की सड़क से कहीं जा रहा था। शेर ने उसकी गर्दन तोड़ी और पीठ पर लाद कर ले गया। सड़क से एक–डेढ़ किलोमीटर भीतर जंगल में आधा खाकर और आधा दूसरे जानवरों के लिए छोड़कर बाघ घने वन में विलुप्त हो गया। अलसुबह घरों से चलकर सवाईमाधोपुर बजरिया दूध बेचने जाने वाले दूधियों ने देखा कि सड़क पर कमण्डल पड़ा है और रक्त। ठहर कर देखा तो पाया घसीटे जाने के निशान हैं। कपड़े जो ताजा–ताजा चिथड़े हुए हैं। आगे जंगल में जाते हुए बाघ के पंजों के निशान। दूधिए इन निशानों का पीछा करते हुए जंगल में चलते चले गए। कुछ आगे चलकर खाड़ में उन्हें आधे खाए जा चुके साघु की लाश दिखाई दे गई।

'लोगों ने कैसे जाना कि बाघ के ही पंजों के निशान थे ?' मैंने अवाक सा सवाल किया।
'बिच्यौ–बिच्यौ ही जाणैं न्हां तो।' उसने बताया कि बच्चे ही पहचानते हैं, आप लोगों की बात करते हो !
तुमने कभी बाघ देखा है मानसिंह ?
'केई बार, न्हांइ देख लियौ ई खेतन म ही। स्याड़ै–स्याड़ै न्हांइ पळयौ रेहवै।'
'क्या अबकी सर्दियों में भी आएगा बाध ?'
'आ बी सकै। पण वा पैली आवौ नीं वा तो खतम हो गियौ।'

'कैसे ?'
'ऊकू तो भैंसन नै ही घेरो देर मार दियौ सर जी। वा बूढ़ो हो गियौ हो। एक दिन वा अटैक कर रियौ हो एक भैंस कै ऊपर। भैंस डकराई तो जितनी भी भैंस म्हां चर री ही, सब आगी। घेरौ दे लियौ चारूं तरफ। अठी आवै तो अठी सूं दे भूंसट। बठी जावै तो बठी सूं दे भूंसट। घायल कर दिया। फेर तो सब गुवाड़ बी आगा। गुंवाडन नै दी लाठी। खमत हो गियौ।'
'फिर ?'
'फिर कांई जंगलात वाड़ा ले गिया। गाड़ी म पटकर।'

'एक टाईगर और आतौ पैली। शंकर जाट नांव हो ऊकौ। वानै एक शंकर जाट नांव का आदमी सूं लड़ाई लड़ी। वा लड़ाई म शंकर जाट खमत हो गियौ। जब सूंई वा टाईगर सूं शंकर जाट खैबा लागग्या।'

बातें रोककर कुछ देर उसने सांस ली। मेरी सांस थमी हुई थीं। जंगल की ऐसी जीवंत और सच्ची घटनाएं पहली बार सुनने को मिल रही थी। वह सुनाने के पूरे मूड में था। और बताओ कहने की जरूरत नहीं पड़ती थी। वह ऑटो–स्टार्ट था–'और सर जी तुमने तो खूब पढ़ी होगी अखबार म। रणथम्भौर सूं टाईगार सरिस्का ले गया वा खबर।'
'हां ऐसा कुछ छपा तो था। ठीक से याद नहीं तुम बताओ ?'

मेरे ऐसा कहने पर मानसिंह इंसान और बाघ के बीच छिड़े महाभारत का वर्णन करने लगा। मैं उसे संजय मानकर अंधे धृतराष्ट्र की तरह सुनने लगा। नीबू की घनी छाया में सुबह के ग्यारह बजे की तेज धूप झिलमिलाने लगी थी।

सर्दियों की बात है। टाईगर पहाड़ियों से निकल कर सरसों के खेतों में आ जाता था। वनकर्मियों ने पंजों के निशानों से पता लगा लिया था। आंखों से देख लिया था कि इन दिनों टाईगर यहां मिल जाता है। फिर एक दिन वन विभाग की जीपों में बंदूकें लिए निशानेबाज आए। पहले से बनाकर गए मचानों पर चढ़ गए। बंदूक का निशाना बाघ पर साधा। कुछ ही पल में बाघ अचेत हो गया। बंदूक के जरिए गोली नहीं मारी गई थी। बेहोशी का इंजेक्शन इंजेक्ट किया था। ऊपर मंडरा रहा हैलीकोप्टर नीचे उतरा। बाघ पकड़ने के विशेषज्ञ फुर्तीले वन–कर्मियों ने उसे फटाफट हैलीकोप्टर में डाला। आधे घंटे के भीतर–भीतर सरिस्का में ले जाकर छोड़ दिया।

'यार मानसिंह अगर तुम्हें जंगल में बाघ मिल जाए तो ?' मैंने कहा।
'अटकड़ सूं काम लेणौ पड़ैगौ सर जी।' उसने बताया।
न्हार अगर जंगल मिल जाय सर जी, तो खड़े रह

जाओ। डर कर भागो नहीं। न्हार भी आपसे डरेगा नहीं। न ही भागेगा। वह आपकी तरफ देखता रहेगा। आप भी उसकी तरफ देखते रहो। दो–तीन टोड़े ले लो हाथ में। फिर उसकी तरफ ऐसे फेंको कि उसके लगे नहीं। उससे थोड़ो दूर फेंको और हा हा हे हे कहते जाओ। जैसे जानवरों को भगाने या रोकने के लिए कहते हैं। जानवर ही तो है मुड़कर चला जाएगा। फिर आप भी अपने रस्ते चलते बनो।

मानसिंह की बात सुनने में तो बढ़िया लगा रही थी पर जंगल में बाघ के साथ इस तरह पेश आने की कल्पना से ही मेरी रूह कांप रही थी। मगर यह सच था कि रएाथम्भौर के जंगलों में बसे गांवों के लिए बाघों,बघेरों, तेंदुओं को मिल जाना आए दिन की घटना होती है। जंगल में गाय–भैंसे चराने वाले ग्वाले और भेड़ बकरियां चराने वाले गड़रियों के लिए जंगली जानवर मिल जाने के दृश्य ऐसे ही आम हैं जैसे हमें घरों के आसपास कुत्ते बिल्ली दिख जाने के दृश्य। यहां विद्यालयों में काम करते हुए मैंने जब बच्चों से घटनाएं लिखवायीं तो ज्यादातर बच्चों की घटनाओं में ऐसे किस्से थे कि उन्हें स्कूल आते समय कितने ही जीव–जन्तु मिल जाते हैं। और नहीं तो घोयली और सांप वगैहरा ही उनके स्कूल में रास्ते में मिलकर मुश्किल खड़ी कर देते हैं। उनकी वजह से उन्हें कई बार रास्ता बदल कर आना पड़ता है।
एक शाम मानसिंह और फोरसिंह सवाईमाधोपुर गेस्ट हाउस आए हुए थे। वे मेरी केबिन में आ गए। अंधे को क्या चाहिए दो आंखें। मुझे क्या चाहिए जंगल के किस्से। फोर सिंह ने कहा–'एक बात पूछता हूं सर जी आपसे। मान लो जंगल में कोई बूढ़ा शेर भूखा है। अब वो भागकर तो शिकार पकड़ नहीं सकता। बताओ वो अपनी भूख कैसे मिटाएगा ?'

मैंने कहा–'यार फोरसिंह जवाब चाहे कुछ भी हो पर यह सवाल ही अपने आप में दिलचस्प है। मुझसे इसका जवाब नहीं लगेगा तुम्हीं बताओ ?

बताता हूं सर जी वह कहने लगा–'वो भूखा शेर क्या करेगा कि वहां जाएगा जहां पानी का झरना या पोखर हो। वहां जामुन के पेड़ रहते हैं। उन पर बहुत सारे बंदर रहते हैं। अब वो पेड़ पर तो चढ़ नहीं सकता। वो क्या करेगा कि देख लेगा किस पेड़ पर ज्यादा बंदर हैं। वह वहां जाएगा और जमीन पर दोनों पंजे टिकाकर सिर नीचा करके ऐसा दहाड़ेगा कि जंगल कांप जाए। उसकी दक्काल को सुनकर बंदर लद–लद जमीन पर गिर पड़ेंगे और वह उनको झबूट लेगा। ऐसे अपना पेट भरेगा, सर जी।'

इस मानसिंह और फोरसिंह ने तो मेरी जंगल देखने की भूख को बुझाने के बजाय भड़का दिया है। अब तो जंगल देखने के लिए मैं भूखा शेर हो गया हूं।

प्रभात

खिड़की

मीश्का का दलिया

मीश्का एक लड़के का नाम है। वह गर्मियों की छुट्टियों में अपने दोस्त के यहां रहने जाता है। दोस्त की मां को एक दिन शहर जाना होता है। मां कहती है, ''पता नहीं मेरा लौटना कब हो। तुम दोनों ढंग से रह तो लोगे, न ?''

''क्यों नहीं ?हम क्या कोई बच्चे हैं !''

''अपना नाश्ता तुम्हें खुद तैयार करना होगा। दलिया पकाना जानते हो ?''

''मैं जानता हूं'' मीश्का ने कहा, ''इससे आसान और क्या है

''मीश्का, ठीक कह रहे हो कि तुम्हें आता है ?तुमने दलिया कभी पकाया भी है ?''

''परवाह मत करो। मैंने देखा है कि अम्मा कैसे पकाती हैं। इसे मुझ पर ही छोड़ दो। मैं तुम्हें भूखा नहीं मारूंगा। मैं ऐसा दलिया पकाऊगा कि तुमने जिंदगी भर न खाया होगा।''

दिन के आखिर में जब दोनों को जोरों की भूख लगी तो दलिया पकाना तय किया।

चूल्हा सुलगाया गया और मीश्का दलिया और पतीली ले आया। मीश्का ने पतीली को करीब–करीब मुंह तक दलिये से भर दिया और फिर उसमें ऊपर तक पानी भर दिया। थोड़े समय बाद पानी और दलिया गर्म होकर उबलने लगे तो वह पतीली के मुंह से बाहर निकलने लगा। कुछ समय बाद उसका पूरा पानी उड़ गया। वे दोनों देखने लगे कि कहीं पतीली में कोई छेद तो नहीं है। लेकिन छेद नहीं पाकर उन्होंने उसमें और पानी डालने का निर्णय लिया। दलिया पकता रहा और मीश्का बीच–बीच में पानी डालता रहा। अन्त में नतीजा यह कि खाने के वक्त दोनों के सामने अधपका दलिया सामने था।

(यह कहानी 'मीश्का का दलिया' भारत ज्ञान विज्ञान समिति से प्रकाशित हुई है।)

राजा गोद

जितेन्द्र प्रजापत,
समूह सूरज

आंखें फूटी फूटी
कान टूटे टूटे

शरीर गोल गोल
टांग छोटी छोटी

कहानी

विनोद का जन्मदिन

एक विनोद नाम का लड़का था। उसके मां–बाप ने उसे पांच वर्ष की उम्र में पढ़ने भेजा। वह अपने साथियों के साथ जाने लगा। बरसात के दिन थे कि उस दिन एक आदमी पानी में बहकर मर गया। उस दिन रविवार की छुट्टी थी। उन दिनों विनोद को पढ़ने नहीं भेजा गया क्योंकि छोटा बच्चा कहीं बह नहीं जाए। विनोद को अध्यापक घर पढ़ाने आने लगे।

एक दिन विनोद शौच जाने की तैयारी में था कि इतनी भयंकर बरसात आई कि बालक को बहा ले गई। विनोद के पापा उसे ढूंढने गए पर वह कहीं नहीं मिला। उन्हें बहुत दुख हुआ क्योंकि विनोद मर गया। वे बिना सन्तान के रहने लगे। रोज–रोज वे रोते ही रहते। परिवार वालों ने कहा–'विनोद तो मर गया। कहां से आएगा ? रो–रो के तुम भी मर जाओगे। वे खाना नहीं खाते। परिवार वाले जोरी जबरन उन्हें खाना खिलाते। वे बहुत सूख गए।

एक दिन विनोद का जन्म दिन आया। उन्होंने उसका जन्म दिन बड़ी धूमधाम से मनाया।

मनराज मीणा, उम्र 10 वर्ष

लड़की घूमने निकली

एक लड़की थी। एक दिन वह घूमने निकली । उसने देखा कि पेड़ों पर रंग बरस रहे हैं। उसने सोचा कि रंग कौन डाल रहा होगा ?उसने ऊपर देखा तो उसे कुछ लोग दिखाई दिए। वे लोग पेड़ों पर रंग डाल रहे थे। शाम हो गई। वह अपने घर लौट गई।

अगले दिन सुबह वह फिर घूमने निकली। वह पहाड़ पर चढ़कर घूम आई। फिर दूसरी जगह गई। वहां उसने देखा कि कुछ कीड़े–मकोड़े एक चिड़िया के बच्चे को खा रहे थे। उसने चिड़िया के बच्चे को बचा लिया। उसी वक्त वहां चिड़िया भी आ गई। उसने लड़की को धन्यवाद दिया। फिर लड़की अपने घर आ गई। उस दिन वहां का मौसम बहुत सुहाना था।

यह कहानी सेजल,अंकित,गुन,आयुष्मान,सम्यक,भावना, चाहत और यश ने मिलकर बनायी है। सभी बच्चे उदय सामुदायिक पाठशाला, बालमंदिर, सवाईमाधोपुर के हैं।

चूहा और चील

एक दिन मैं चबूतरे पर खड़ा था। नीचे जमीन पर एक चूहा था। ऊपर चील थी। तो चील नीचे आई और उसने चूहे को पकड़ा। चूहा चिल्लाया। चील उसे ले जाकर बबूल के पेड़ पर बैठकर खाने लगी। चूहा चिल्लाता रहा।

चेतराम मीणा, उम्र 10 वर्ष, समूह सागर

अचानक मैं बहुत डरा

एक बार मैं डूंगर में गया। मैं बकरी चरा रहा था। तो मुझे दो सियार मिले तो मैं डर गया। वे एक खरगोश को खा रहे थे। अचानक मैं बहुत डरा और डर के मारे मैंने पत्थर उठा लिए। सियारों ने एक ने तो खरगोश की टांग पकड़ी और दूसरे ने मुंडी पकड़ी और भाग गए। तब हमने एक चट्टान पर बैठकर खड़ूल्या खाए।

राजकुमार, उम्र 8 वर्ष, समूह–इन्द्रधनुष

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

पहेलियां

1 मैं लड़का माली का, कुर्ता पहनूं जाली का
पत्थर से सलाम करूं, अंदर से काम करूं।

2 रग्गौ चालै रग रग, तीन मूंडा दस पग।

3 पांच लोटे, लोटे के बत्तीस लोटे हलेंगे,
छम छम माई नाचेगी तब हिन्डू बाबा भरेगा।

4 आठ कुटकला नौ सौ जाली
जिस पर बैठी दो बनजारी।

5 अठी नदी, उठी नदी बीच में खजूर
झंझा रानी हेला पाड़ै भोमिया कितनी दूर।

6 हरी डिब्बी लाल डिब्बी, रस टपकै
चली जा गौरी सासरै जंवाई ठसकै।

7 असली घोड़ो, भीत फोड़ो।
8 खेत में बोवे, मेर में उगे।

9 एक भाई औंधौ, एक भाई सौंधौ।

10 खेत चली माड़ चली, मूसल सौ लटकार चली।

(ये सभी पहेलियां उदय सामुदायिक पाठशाला, बोदल के बच्चों ने आपसे बूझी हैं। आपके जवाब सही है कि गलत इस बारे में अगले अंक तक इंतजार करवाने की पता नहीं उन्हें क्या सूझी है।)

बात लै चीत लै

मैं घर के ऊपर से होकर आऊंगा

एक बार एक ठाकुर घोड़ी लेकर आ रहा था। उसको आते–आते शाम हो गई। वह रणथम्भौर के जंगल में से गुजर रहा था। जंगल में एक गांव पड़ा मोर डूंगरी। ठाकुर मोर डूंगरी गांव में एक गुर्जर के घर रुक गया।

रात के समय बैठे–बैठे बातचीत में ठाकुर ने गुर्जर से कहा कि आज रात को मेरी घोड़ी बच्चा देगी। गुर्जर ने कहा कि आज रात को मेरी भैंस भी बच्चा देगी। बात करते करते दोनों सो गए। रात में गुर्जर उठा उसने देखा कि ठाकुर की घोड़ी के बच्चा हुआ है और उसकी भैंस के भी बच्चा हुआ है। गुर्जर ने घोड़ी का बछेरा उठाया और अपनी भैंस के नीचे रख दिया। भैंस का पडरेट उठाया और ठाकुर की घोड़ी के नीचे रख दिया। सुबह हुई तो ठाकुर ने देखा घोड़ी के बच्चा हुआ या नहीं ? घोड़ी के नीचे भैंस का पडरेट था। ठाकुर समझ गया गुर्जर ने चालाकी की है। उसने घोड़ी के बच्चे को उठाया और बोदल गांव की ओर जाने लगा। गुर्जर ने उसे रोक दिया। कहा कि यह बछेरा तो मेरी भैंस के हुआ है। उसने घोड़ी के बच्चे को नहीं ले जाने दिया।

ठाकुर ने आदमी इकट्ठे किए कि मेरा फैसला करो। उसने पंचायत में कहा कि पंचो भैंस के भी कभी घोड़ी का बच्चा हुआ है क्या ?पंचो ने कहा नहीं भई ऐसा तो कभी नहीं हुआ। लेकिन गुर्जर ने पंचों की बात नहीं मानी कहा कि हुआ है। और घोड़ी का बच्चा देने से इंकार कर दिया। तब ठाकुर भैंस का बच्चा लेकर ही चल दिया।

जंगल के रास्ते में बोदल गांव के खाड़ से होकर जब वह गुजर रहा था उसे एक सियार मिला। सियार ने कहा कि ठाकुर कैसे उदास है ?ठाकुर ने जो हुआ वो सब सियार को कह सुनाया। सियार ने कहा कि तू वापस मोर डूंगरी जा। वहां दुबारा पांच आदमी इकट्ठे कर लेना और गुर्जर को भी बुला लेना। मैं अभी आ रहा हूं। मैं तुम्हारा फैसला कर दूंगा। मैं घर के ऊपर से होकर आऊंगा, यह कहकर सियार रणथम्भौर के घने वन में गायब हो गया।

उधर मोर डुगरी में पंचायत शुरू हुए काफी देर हो गई। मानसिंह गुर्जर नाम के पंच ने कहा कि भाई तुम्हारा फैसला करने वाला अभी तक नहीं आया ? इतने में ही ठाकुर को सियार दिखाई दिया। वह हल्ला करते हुए बोला कि पंचो फैसला करने वाला आ गया है। पंच बोले कि कहां है ?ठाकुर ने कहा कि

वह देखो घर के ऊपर। यह सियार ही मेरा फैसला करेगा। सियार ने भी कहा कि हां मैं फैसला करूंगा। गुर्जर सियार से बोला कि फैसला करने वाले पहले यह तो बताओ कि तुम इतनी देर से क्यों आए ?सियार ने कहा कि भाई बनास नदी में आग लग गई थी। इसलिए मुझे आने में देर हो गई ? गुर्जर हहह हंसने लगा। बोला–'हहह नदी में कभी आग लगती है भला ?' सियार भी हहह हंसने लगा। बोला–भैंस के भी कभी घोड़ी का बछेरा हुआ है भला ?'

यह सुनकर गुर्जर ने घोड़ी का बच्चा ठाकुर को दे दिया और भैंस का बच्चा ले लिया।

(यह लोककथा बलवीर गुर्जर,उदय सामुदायिक शाला, बोदल ने संकलित की है।)

नन्दिनी,
उम्र–साढे तीन साल

तेरी मेरी, मेरी तेरी बात

प्यारे बच्चो,

अपने बीच पिछले एक–दो महीने से यह बात चल रही थी कि अपने चारों स्कूल की एक शामिल पत्रिका निकालेंगे। इसके लिए आपसे बहुत सारी रचनाएं मांगी जा रही थीं। आपने खूब सारे अनुभव लिखे, घटनाएं लिखीं, कहानियां, कविताएं लिखीं। चित्र बनाकर भेजे। उनमें से कुछ रचनाएं इस अंक में शामिल कर ली हैं। और आपकी बहुत सारी रचनाएं अभी भी इस पत्रिका की संपादकीय टीम के पास रखी हुई हैं। आगे के अंकों में उन रचनाओं को शामिल किया जाएगा। आपकी कुछ चुनी हुई रचनाएं हमने आपकी प्रिय पत्रिका चकमक को भी भेजी हैं।

पत्रिका का क्या नाम रखा जाए ?इसके जवाब में आपने बहुत सारे नाम हमें बताए थे। उन नामों में से सबसे अधिक सहमती 'मोरंगे' नाम पर आई। इस तरह हमारी इस हर महीने निकलने वाली पत्रिका का नाम अब 'मोरंगे' पड़ गया है। 'मोरंगे' या कहें 'मोर के पंख' जंगल,खेत, गांव के बाड़े में तो सर्दियों में जगह–जगह बिखरे मिलेंगे ही गांवों में घरों की दीवारों पर बने मांडनों के मोरों के भारी–भारी पूंछों में भी सफेद खड़िया से बने मोरंगे जगह–जगह देखे जा सकते हैं।

अपनी इस पत्रिका 'मोरंगे' में कहानी–कविता,लेखों और सम्पादकीय के अलावा पांच स्थायी स्तम्भ होंगे। वे इस प्रकार होंगे–

1 तेरी मेरी मेरी तेरी बात

इस स्तम्भ में पाठकों के पत्र शामिल किए जाएंगे। 'मोरंगे' कैसी लगी ? इसमें छपी कौनसी कहानी,कविता या कोई भी रचना आपको पसंद आई, नहीं आई आदि बातें छपेंगी। लेकिन वे छपेंगी तभी जब आप किसी रचना के अच्छा या बुरा लगने का कारण भी लिखोगे। इसके अलावा आप इस स्तम्भ में अपने पत्र भेजकर 'मोरंगे' के लिए कोई सुझाव भी भेज सकते हैं।

इस बार चूंकि यह पहला ही अंक था। संपादकीय टीम के पास कोई पत्र नहीं था। तो सोचा क्यों न हम आपको पत्र लिखकर इस स्तम्भ की शुरूआत कर दें। आगे भी 'तेरी मेरी,मेरी तेरी बात' स्तम्भ में हम पत्रिका के पाठकों यानी पढ़ने वालों और संपादकीय टीम के बीच बातचीत चलती रहेगी।

2 खिड़की

खिड़की स्तम्भ में सोचा है कि दुनिया भर के साहित्य में बच्चों के लिए जो कुछ अच्छा

लिखा गया है उसमें से कोई एक रचना चुनकर दी जाए। इस बार आप पढ़ेंगे–'मीश्का का दलिया।'

3 मटरगश्ती बड़ी सस्ती

इस स्तम्भ में आपके भेजे चुटकुले, पहेलियां आदि छपेंगे।

4 बात लै चीत लै

इस स्तम्भ में हर बार कोई एक बात छापी जाएगी। जो घरों में बड़े, बुजुर्ग,मां–दादी–नानी आदि से सुनने को मिलती हैं। बात कहने के बाद अपने यहां कहते हैं–'बात लै चीत लै,पैला घर की भीत लै, फूटगी तो लीप लै।' इसे सुनकर ही हमने इस स्तम्भ का नाम बात लै चीत लै रखने का तय किया।

5 हमने बढ़ायी, अब कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ।

इस स्तम्भ में अधूरी रचनाएं पूरी करने का मामला होगा। कहानी और कविता शुरू हमारी संपादकीय टीम कर देगी उसे आगे बढ़ाते हुए पूरा आप करेंगे। और हमें भेज देंगे। हमने सोचा है कि आपकी पूरी करके भेजी हुई रचनाओं को हम इस स्तम्भ में छापा जाए।

इनके अलावा सम्पादकीय भी 'मोरंगे' का एक स्थायी स्तम्भ होगा जिसको नाम दिया है–'पखेरू मेरी याद के'।

'मोरंगे' आपको कैसी लगी हमें जरूर बताना। तेरी मेरी मेरी तेरी बात में आपके पत्रों का हमें इंतजार रहेगा।

चड्डी भी

एक राजा था और रानी थी। दोनों बैठे हुए थे। तो वहां पर एक चूहा आया। फिर एक बंदर और भालू आया। भालू ने चूहे को खा लिया। फिर टिफिन,बैग और बोतल को भी खा लिया। अभी भालू को और भूख लगी थी। तो उसने अपनी चड्डी भी खा ली।

चीनू, उम्र तीन वर्ष समूह मुस्कान, उदय सामुदायिक पाठशाला, सवाईमाधोपुर

हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

कविता

म्हारी मींडकड़ी नै पाणी पिला
बादल अबकै बेगौ–बेगौ बरस्यौ कोनी रै
– – – – – – – – – – – – – – – – – –

कहानी

एक कछुआ था। वो रंग बिरंगा था। उसका घर बारिश के मौसम में था।
– – – – – – – – – – – – – – – – – –

कविताएं

टक ठक

बोतल का ढक्कन खुला पक

हाथ से गिलास छूटा टक

पापा ने डण्डा मारा ठक

चेहरे का रंग हुआ फक

आंख में आंसू आए...........................

टप टप टप !

विष्णु गोपाल, शिक्षक, जगनपुरा

मन के ढोल

खेतों में फसलें लहराती सौंधी हवा चले बारिश की
बिजली चमके चम चम चम
दादुर मोर पपीहे बोले
मन के ढोल बजे ढम ढम

विजय सिंह, शिक्षक, फरिया

पढ़ने के लिए तो अपने स्कूल ही आना था ना

हमारे यहां एक बच्चा पढ़ता था, रूपांशु। जब वह स्कूल में आया था उसकी उम्र तीन वर्ष थी। वह बहुत रोता था। बाद में स्कूल में घुल–मिल गया। रूपांशु ड्रॉइंग बहुत सुन्दर बनाता था और शरमाता बहुत था। जब वह 5 वर्ष का हुआ तो उसके पापा का ट्रांसफर जालौर हो गया। रूपांशु से पूछने पर कि क्या तुम अब जालौर में रहोगे ? तो उसने कहा–'हां। पर पढ़ने तो मैं अपने ही स्कूल में आऊंगा ना।'

और एक दिन रूपांशु जालौर चला गया। पता नहीं हम क्यों हमेशा उसे स्कूल में ही ढूंढते ! फिर एक दिन उसका फोन आया। वह रो रहा था। बोला–'मीनू आंटी ! पढ़ने के लिए तो अपने स्कूल ही आना था ना।' मैने उसे समझाया।

अभी राखी पर वह सवाई माधोपुर आया। हम सबसे मिला। स्कूल आया। मुझसे मिलने वो मेरे घर पर भी आया। बहुत शरमा रहा था। अपनी मम्मी के पीछे छुप रहा था। मैने उसे पास बुलाया। वह हर बात का जवाब केवल 'हां' या 'ना' में दे रहा था। थोड़ी देर बाद उन लोगों के जाने का समय हो गया। सब गाड़ी में बैठ गए। मैने बाय किया। उस वक्त बहुत तकलीफ हो रही थी। आंखों में आंसू आ गए। पता नहीं अपने इस बच्चे को मैं फिर कब देख पाऊंगी ?

मीनू मिश्रा, शिक्षिका, उदय सामुदायिक पाठशाला, सवाईमाधोपुर

नीम का पेड़

मेरे घर के आंगन में
खड़ा है वह
नहीं, वो कोई आदमी नहीं
वो कोई जानवर नहीं
वो तो है मेरा नीम का पेड़

नीम का पेड़
जिसकी ठंडी छांव में
मैं पलंग बिछाके सोई
मम्मी के डांटने पर
उससे चिपक के रोई

सपना राजावत
शिक्षिका, उदय सामुदायिक
पाठशाला, जगनपुरा

हैलपर उतर कर आता

शाम की मधुर बेला में
जब अंधियारा छा जाता
गाय भैंस बकरियों की घंटियां
मधुर आलाप बनाती
पीछे आ आ ह ह की आवाज
लगाता
ग्वाला आता
लगता घेरने उनको
पीछे से मोटर की पों पों
हैलपर उतर कर आता कहता
ऐ ऐ हटो–हटो जल्दी हटो

राजेश कुमावत
शिक्षक, उदय सामुदायिक
पाठशाला,बोदल

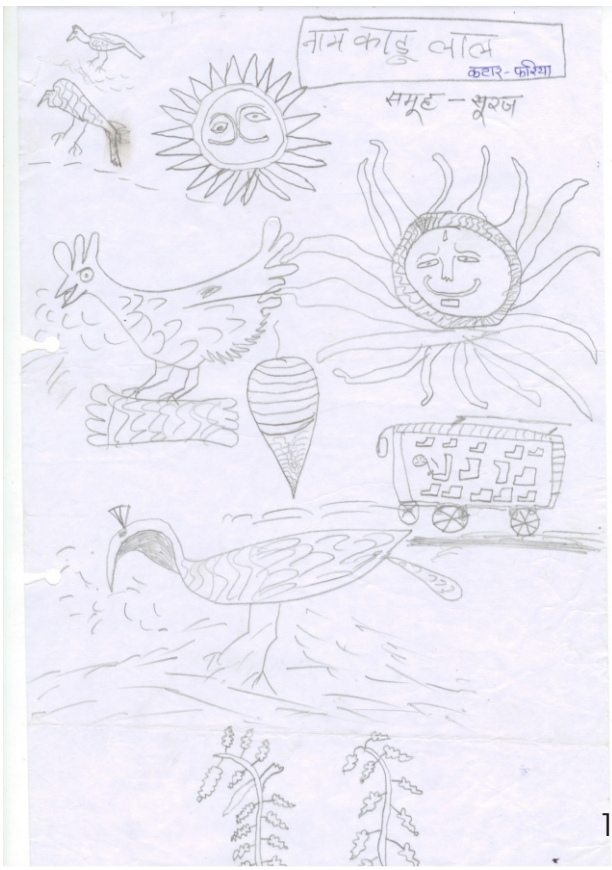

ओजू पूंछूंगो

पहली बार मैं जिस शाला (पीपलगढ़) में गयी वहां के बच्चों ने मुझे शुरू में स्वीकार नहीं किया था। वे मेरी किसी बात को नहीं मानते और काफी परेशान करते। बार–बार यही कहते कि तुम यहां से चली जाओ। सामान को इधर–उधर छिपा देते और पूछो तो कहते हमें पता नहीं। उन्होंने मेरा नाम भी निकाल दिया और उसी नाम से बोलते। इसकी जानकारी मुझे कुछ बच्चों ने दी।

एक बार मैं समूह में पढ़ा रही थी। कुछ बच्चे अपना कार्य कर रहे थे। मेरे समूह में एक बच्चा ऐसा था जिसकी नाक हमेशा बहती रहती थी। उस बच्चे को नाक साफ करने के लिए बार–बार कहना पड़ता था। शुरू में तो कुछ समय के लिए उसने नाक व हाथों को पानी से साफ किया। बार–बार कहने पर बच्चे भी उसका मजाक बनाते। कोई कहता–'क्या करेगा साफ करके डिब्बा भर के रख ले। हलुआ बनाने के काम आयेगा।' कोई कहता–'रोटी पर लगा के खा ले। इकट्ठा करके पीपा भर ले, बाजार में बेचकर पैसे ले लेना।' वो बच्चा उनकी बातों को सुनकर कुछ हंस देता और कहता–'तेरे को चाहिए तो ले ले।' ऐसे उन बच्चों की चुहलबाजी चलती रहती।

बार–बार हाथ और नाक पानी से धोने के लिए उस बच्चे को उठकर जाना पड़ता था। कुछ समय बाद उसने क्या करना शुरू किया कि जब भी उसे नाक साफ करने के लिए कहा जाता, वह अपनी शर्ट के बाजू से नाक साफ कर देता और अपने काम में लग जाता। एक दिन वह शर्ट पहनकर नहीं आया और नाक साफ करने के लिए अपनी बनियान का उपयोग कर रहा था। मेरी उस बच्चे की तरफ पीठ थी। अचानक उसे जोर की छींक आई और उसका काफी सारा नाक एक साथ बाहर आ गया। मुझे इस बात का पता नहीं था। मैं आराम से काम करवाती रही। जब लंच हुआ और मैं पानी पीने के लिए गयी तो साथ की शिक्षिका ने देखा और कहा तुम्हारी चुन्नी पर क्या लगा है ?मैने कहा–'मुझे पता नहीं।' फिर मैने देखा तो मेरी चुन्नी पर काफी सारा नाक लगा हुआ था। मुझे समझ में नहीं आया ये मेरे कपड़ों पर कहां से आया। फिर मैने उसे पानी से साफ किया। बार–बार मैं यही सोच रही थी कि ये आया कहां से ?तभी मुझे उस बच्चे का ध्यान आया। मैंने जाकर उससे पूछा कि तूने मेरी चुन्नी से नाक साफ की है ?उसने पहले तो मना कर दिया और कहा कि तुम्हारी चुन्नी से क्यों साफ करूंगा, मैंने तो बनियान से साफ किया था। लेकिन कुछ बच्चों ने उसकी सच्चाई बता दी कि इसी ने नाक साफ किया था और यह कह रहा था कि आज मैं कुर्ता नहीं पहन के आया मैडम की चुन्नी से नाक साफ करूंगा। इसके बाद उस बच्चे से बात की तो उसने अपनी बात मान ली और हंसने लगा। इसके बाद छुट्टी में जाते समय बोल कर गया ''ओजू पूंछूंगौ''। अगले दिन मैने उस बच्चे को एक रूमाल दिया अब वह उसी का उपयोग करने लगा।

रंजीता
शिक्षिका, फरिया

इन चित्रों को कोई नाम दो

ढीतरनम
समूह - वर्षा
उम्र - ९ वर्ष